Date
27/04/2020

Subject - New Efforts in Elementary Education
Topic - (MACAULAY'S MINUTES, 1835)
(मैकाले का विवरण-पत्र)
(1835)

D.El.Ed.
2nd Sem

जब भारत में प्राच्य-पाश्चात्य-विवाद अपनी चरम सीमा में पहुँच गया था जिस कारण भारतीय शिक्षा के इतिहास में विशाल अन्धकार छा गया था। उसी समय 10 जून, 1833 में सुप्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री 'लार्ड मैकाले', उदित होते हुए सूर्य के समान गवर्नर जनरल की कौंसिल के सदस्य के रूप में भारत आए। मैकाले अंग्रेजी के प्रकाण्ड विद्वान थे।

भारत आने पर तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड विलियम बैंटिक ने प्राच्य-पाश्चात्य विवाद की समस्या को हल करने के लिए मैकाले को बंगाल की 'लोक-शिक्षा समिति' का प्रधान नियुक्त किया। बैंटिक ने मैकाले से 1813 के आज्ञा पत्र की शिक्षा सम्बन्धी धारा 43 की व्याख्या करने के लिए और शिक्षा के क्षेत्र में धनराशि को व्यय करने के सम्बन्ध में कानूनी परामर्श माँगा। मैकाले ने तत्कालीन शिक्षा सम्बन्धी समस्या की छानबीन कर अपना सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक विवरण-पत्र 7 फरवरी, 1835 को गवर्नर जनरल की कौंसिल के समक्ष प्रस्तुत किया।

मैकाले द्वारा धारा 43 की व्याख्या :-

मैकाले द्वारा की गई धारा 43 की व्याख्या का विवरण इस प्रकार है -

1) साहित्य शब्द की व्याख्या :- मैकाले ने धारा 43 की व्याख्या में साहित्य शब्द को स्पष्ट करते हुए लिखा कि साहित्य के अन्तर्गत अंग्रेजी साहित्य भी आएगा न कि केवल अरबी और फारसी साहित्य।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

(2) 'भारतीय विद्वान' से आशय ⇒ भारतीय विद्वानो के अन्तर्गत वे विद्वान आयेंगे जो लॉक व मिल्टन के दर्शन तथा कविता से सम्बान्धित हों अर्थात केवल प्राच्य विद्वान ही नही अपितु पाश्चात्य साहित्य को जानने वाले विद्वान भी इसी श्रेणी मे आयेंगे।

(3) एक लाख रुपये की धनराशी व्यय करने के सम्बन्ध मे ⇒ मैकाले ने अपने विवरण-पत्र मे लिखा कि एक लाख रुपये की धनराशी पर कम्पनी का अधिकार है और कम्पनी जिस प्रकार चाहें वह धनराशी खर्च कर सकती है। कम्पनी को इस धनराशि को खर्च करने मे किसी प्रकार की कोई बाध्यता

* पाश्चात्य साहित्य के विषय में मैकाले के सुझाव ⇒

मैकाले प्राच्य साहित्य को व्यर्थ समझता था। वह भारत मे पाश्चात्य साहित्य की व्यवस्था के पक्ष मे था।

पाश्चात्य साहित्य को महत्वपूर्ण बताने के सम्बन्ध मे निम्नलिखित सुझाव दिये -

1.) अंग्रेजी संसार का सर्वश्रेष्ठ साहित्य है। इसका ज्ञान-विज्ञान अपार है।

2.) शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी बनाया जाए। इसका ज्ञान भारतीयों के लिए आवश्यक है।

3.) मैकाले ने भारतीय साहित्य, अरबी साहित्य की तुलना यूरोपीय पुस्तकालय की मात्र एक अलमारी की पुस्तकों से की।

4.) भारतीय इतिहास व भूगोल की निन्दा करते हुए मैकाले ने कहा 60 फीट लम्बे राजा व मक्खन व शीरे के समुद्र का वर्णन निरर्थक है

5.) भारतीय चिकित्सा साहित्य को पढने मे अंग्रेज पशु-चिकित्सकों को भी शर्म आयेगी।

6.) अंग्रेजी शासक वर्ग की भाषा है।

7.) संस्कृत और अरबी विद्यालय तथा कॉलेज तुरन्त बन्द कर अंग्रेजी माध्यम के स्कूल व कॉलेज खोलने चाहिए।

Continue---

Nidhi Tyagi

27/04/2020

Scanned with CamScanner